- विषय-सूची -

विषय

१ स्पर्श अनुयोगद्वार

- टीकाकारका मंगलाचरण
- स्पर्श अनुयोगद्वारके कथनकी सूचना
- स्पर्श अनुयोगद्वारके १६ अधिकारोंका नामनिर्देश
- स्पर्शनिक्षेपकी प्रतिज्ञा
- स्पर्शनिक्षेपके १३ भेद
- स्पर्श नयविभाषणताके कथनकी प्रतिज्ञा
- तेरह प्रकारके स्पर्शनिक्षेपोंका कथन न कर पहले स्पर्शनयविभाषणताके कथन करनेका कारण
- कौन नय किस स्पर्शको स्वीकार करता है, इसका विचार
- नैगम व्यवहार और संग्रहनयकी अपेक्षा ऋजुसूत्रनय और शब्दनयकी अपेक्षा नामस्पर्शका विचार
- स्थापनास्पर्शका विचार
- द्रव्यस्पर्शका विचार
- अमूर्तजीवका मूर्त पुद्‌गलके सात सम्बन्ध कैसे होता है, इस शंकाका समाधान
- संसारी जीव यदि मूर्त हो तो उसके
- जीव और पुद्‌गलका आदि बन्ध क्यों नहीं बनता
- द्रव्यकी स्पर्श संज्ञाका कारण
- द्रव्यस्पर्शके ६३ भंग
- एकक्षेत्रस्पर्श विचार
- अनन्तरक्षेत्रस्पर्श विचार
- देशस्पर्श विचार
- परमाणुके सावयवत्वकी सिद्धि
- त्वक्‌स्पर्श विचार
- त्वक् और नोत्वक्‌स्पर्शके ८ भंग
- सर्वस्पर्श विचार
- एक परमाणुका दूसरे परमाणुके साथ किस प्रकारका संयोग होता है, उसका विचार
- स्पर्शस्पर्शविचार
- स्पर्शस्पर्शके आठ भेद
- मतान्तर और उसका निराकरण
- आठ स्पर्शोंके २५५ संयोगी भंग
- कर्मस्पर्श विचार
- कर्मस्पर्शके आठ भेद
- सब कर्मोंके संयोगसे कुल ६४ भंग
- उनमें ३६ अपुनरुक्त भंग

मूर्तत्वका अभाव कैसे होता है, इस शंकाका समाधान

- बन्धस्पर्शके मुख्य पाँच भेद
- औदारिक आदि शरीरोंके संयोगसे होनेवाले २३ भंग
- उनमें १४ अपुनरुक्त भंग
- भव्यस्पर्श विचार
- भावस्पर्श विचार
- प्रकृतमें कर्मस्पर्श विवक्षित है
- महाकर्मप्रकृतिप्राभृतमें द्रव्यस्पर्श, सर्वस्पर्श, और कर्मस्पर्श विवक्षित है
- कर्मस्पर्शका शेष १५ अधिकारोंके द्वारा कथन नहीं करनेका प्रयोजन

२. कर्म अनुयोगद्वार

- टीकाकारका मंगलाचरण
- कर्म अनुयोगद्वारके कथनकी प्रतिज्ञा
- कर्म अनुयोगद्वारके १६ अधिकार
- कर्मनिक्षेपका विचार
- कर्मनिक्षेपके १० भेद
- कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है, इस बातका विचार
- नैगम, व्यवहार और संग्रह नयकी अपेक्षा उसका विचार
- बन्धस्पर्शविचार
- नामकर्मका विचार
- स्थापनाकर्मका विचार
- द्रव्यकर्मका विचार
- प्रयोगकर्मका विचार
- प्रयोगकर्मके तीन भेद और स्वामी
- समवदानकर्मका विचार
- अधःकर्मका विचार
- ईर्यापथकर्म और उसके स्वामीका विचार
- पुरानी तीन गाथाओंके आधारसे ईर्यापथ कर्मका विशेष विवेचन
- प्रथम गाथाका अर्थ
- ईर्यापथ कर्ममें प्रदेश व अनुभागका विचार
- ईर्यापथ कर्म सातारूप है इस प्रसंगसे सुखका विचार
- दूसरी गाथा का अर्थ र
- जिनदेव आमय और तृष्णासे रहित क्यों हैं इस बातका विचार
- तीसरी गाथाका अर्थ
- तपःकर्मका विचार
- तपःकर्मके भेद-प्रभेद
- तपका लक्षण

- ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा विचार
- शब्दनयकी अपेक्षा विचार
- स्त्री और पुरुषके ग्रासका नियम
- वृत्तिपरिसंख्यान तप और उसका फल
- रसपरित्याग तप और उसका फल
- कायक्लेश तप और उसका फल
- विविक्तशय्यासन तप और उसका फल
- प्रायश्चित्त तप
- प्रायश्चित्तके १० भेद और उनका स्वरूप
- विनय तप
- वैयावृत्त्य तप
- व्युत्सर्ग तप
- ध्यान तप
- ध्यानके चार अधिकार
- ध्याता का विशेष विचार
- ध्येयका विशेष विचार
- ध्यानके दो भेद
- धर्मध्यानके चार भेद
- आज्ञाविचय धर्मध्यान
- अपायविचय धर्मध्यान
- विपाकविचय धर्मध्यान
- अनेषण तप और उसका फल
- अवमौदर्य तप और उसका फल
- कारण
- सकषाय जीव धर्मध्यानका अधिकारी है
- कषायरहित जीव शुक्लध्यानका अधिकारी है
- ध्यान सम्बन्धी अन्य विशेषताएँ
- धर्मध्यानमें तीन शुभ लेश्याएँ होती हैं
- धर्मध्यानका फल
- शुक्ल ध्यानमें शुक्ल विशेषणका कारण
- शुक्लध्यानके चार भेद
- पृथक्त्ववितर्कवीचार
- एकत्ववितर्कवीचार
- दोनों शुक्लध्यानोंका आलम्बन
- दोनों शुक्लध्यानों व धर्मध्यानका फलविचार
- एकत्ववितर्कअवीचार ध्यानको अप्रतिपाती विशेषण ने देनेका कारण तथा स्वामिविचार
- शुक्लध्यानके चिह्न
- सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति ध्यानका विचार
- केवलज्ञानके कालमें सयोगिजिनके होनेवाली क्रियाओंका निर्देश

| | |
|---|---|
| • संस्थानविचय धर्मध्यान<br>• धर्मध्यान और शुक्लध्यानका विषय एक होकर भी उन दोनों ध्यानोंमें भेदोंका<br>• भावकर्मविचार<br>• यहाँ समवदान कर्मका प्रकरण है<br>• दस कर्मोंमेंसे छह कर्मोंकी अपेक्षा सत्संख्या आदि आठ अधिकारोंका निरूपण<br>• सदनुयोगद्वारनिरूपण<br>• द्रव्यप्रमाणानुगम निरूपण<br>• छह कर्मोंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका स्पष्टीकरण<br>• क्षेत्रानुगम निरूपण<br>• स्पर्शनानुगम निरूपण<br>• कालानुगम निरूपण<br>• भावानुगम निरूपण<br>• अल्पबहुत्व निरूपण<br>• यहाँ कर्मके शेष अनुयोगद्वारोंका कथन न करनेका कारण<br>३. प्रकृति अनुयोगद्वार<br>• टीकाकारका मंगलाचरण<br>• प्रकृति के १६ अधिकार | • सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति को ध्यान संज्ञा देनेका कारण<br>• व्युपरतक्रियानिवर्ति ध्यानका विचार<br>• इसे ध्यानसंज्ञा देनेका कारण<br>• क्रियाकर्मविचार<br>• ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा<br>• शब्दनयकी अपेक्षा<br>• नामप्रकृति विचार<br>• स्थापनाप्रकृति विचार<br>• द्रव्यप्रकृतिके दो भेद व स्वरूप निर्देश<br>• आगमद्रव्यप्रकृतिके अर्थाधिकार<br>• उपयोगके प्रकार<br>• नोआगमद्रव्यप्रकृतिके दो भेद<br>• नोकर्मप्रकृतिका विचार<br>• कर्मप्रकृतिके आठ भेद<br>• ज्ञानावरणके प्रसंगसे ज्ञानका स्वरूपनिर्देश व जीवके पृथक् अस्तित्वकी सिद्धि।<br>• दर्शनका स्वरूपनिर्देश<br>• ज्ञानावरणकी पाँच प्रकृतियाँ<br>• पाँचों ज्ञानोंका स्वरूपनिर्देश<br>• जीवके केवलज्ञान स्वभाव होने पर भी पाँच ज्ञानोंकी उत्पत्तिका कारणसहित विवेचन |

- प्रकृतिनिक्षेपके चार भेद
- कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है इस बातका निरूपण
- नैगम, व्यवहार और संग्रह नयकी
- ईहा अनुमान ज्ञान नहीं है आदि विचार
- अवाय ज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- धारणा ज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- अवग्रहावरणीय कर्मके दो भेद
- अर्थावग्रह और व्यञ्जनावग्रहका स्वरूप
- व्यञ्जानावग्रह कर्मके चार भेद
- शब्दके छह भेद व उनका स्वरूप
- भाषाके भेद और उनके स्वामी
- अक्षरात्मक भाषाके दो भेद और उनके बोलनेवाले
- श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहका स्वरूप
- शब्दपुद्‌गल लोकान्ततक कैसे फैलते हैं इसका विचार
- शब्दोंके लोकान्ततक जानेमें कितना काल लगता है इसका विचार
- समश्रेणि और विषमश्रेणिसे आये

- आभिनिबोधिक ज्ञानावरणके भेद
- अवग्रह आदिकी मुख्यतासे चार भेद
- अवग्रह ज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- ईहा ज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- संशयप्रत्ययका अन्तर्भाव
- सब इन्द्रियाँ अप्राप्त अर्थोंका ग्रहण करती हैं इसकी सिद्धि
- अर्थावग्रहावरणीयके छह भेदोंके नाम
- अधिकारी भेदसे कौन इन्द्रिय कितने दूरके विषयको जानती है इसका विचार
- ईहावरणीय कर्मके छह भेद व विशेष विवेचन
- अवायावरणीयके छह भेद
- धारणावरणीयके छह भेद
- आभिनिबोधिक ज्ञानावरणके सब भेदोंका निर्देश
- बहु आदि पदार्थोंका स्वरूपनिर्देश
- उच्चारणाद्वारा उन सब भेदोंका उल्लेख
- आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीयकी अन्य प्ररूपणा
- अवग्रह ईहा आदिके पर्यायनाम
- आभिनिबोधिकके पर्यायनाम
- श्रुतज्ञानावरण कर्मका विचार

हुए शब्द किस प्रकार सुने जाते हैं इसका विचार

- शेष व्यञ्जनावग्रहों व उनके आवरणोंका विचार
- अर्थावग्रहावरणीयके छह भेद
- यहाँ संयोगसे क्या लिया है इसका विचार
- संयोगी अक्षरका दृष्टान्त
- श्रुतज्ञानावरण कर्मकी वीस प्रकारकी प्ररूपणा स्वरूपनिर्देश
- पर्यायज्ञानका स्वामी व विशेष विचार
- पर्यायसमासज्ञान
- पदश्रुतज्ञान
- पदके तीन भेद
- मध्यम पदमें अक्षरोंकी संख्या
- सकल श्रुतके समस्त पदोंकी संख्या
- पदसमास व संघात श्रुतज्ञान
- अक्षरश्रुतके ऊपर छह प्रकारकी वृद्धिका निषेध
- संघातसमास प्रतिपत्ति श्रुतज्ञान
- प्रतिपत्तिसमास आदि श्रुतज्ञानके

- श्रुतज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- श्रुतज्ञानावरणीयकी संख्यात प्रकृतियोंका निर्देश
- अक्षरोंका प्रमाण
- संयोगी अक्षरोंका प्रमाण व उनके लानेकी विधि आदि
- श्रुतज्ञानके आवरणोंकी व्यवस्था
- श्रुतज्ञानावरणीयके प्रसंगसे श्रुतके पर्यायवाची नाम और उनकी व्याख्या
- अवधिज्ञानावरणीय कर्म और उसकी प्रकृतियाँ
- अवधिज्ञानके दो भेद
- पर्याप्त अवस्थामें अवधिज्ञानकी उत्पत्ति होती है इसका सकारण विचार
- किन्तु भवानुगामी अवधिज्ञान भवके प्रथम समयमें भी होता है इस बातका निर्देश
- भवप्रत्यय अवधिज्ञानके स्वामी
- गुणप्रत्यय अवधिज्ञानके स्वामी
- अवधिज्ञानके भेद-प्रभेद और उनका व्याख्यान
- एकक्षेत्र और अनेकक्षेत्र अवधिज्ञानका विशेष व्याख्यान
- अवधिज्ञानका काल

शेष भेद

- प्रतिसारी बुद्धिवाले जीवोंकी अपेक्षा श्रुतका विचार
- श्रुतके वीस भेदोंका विशेष विचार
- अगबाह्य ग्यारह अंग और परिकर्म आदिका कहाँ अन्तर्भाव होता है इसका विचार
- विचार
- सौधर्मकल्प आदिमें अवधिज्ञानके क्षेत्र और कालका विचार
- परमावधि ज्ञानके क्षेत्र और कालका विचार
- सर्वावधिज्ञानके क्षेत्र और कालके जाननेकी सूचना
- तिर्यंचोंमें अवधिज्ञानके उत्कृष्ट द्रव्य तथा नारकियोंमें जघन्य व उत्कृष्ट क्षेत्रका निर्देश
- जघन्य और उत्कृष्ट अवधिज्ञानके स्वामीका निर्देश
- मनःपर्यय ज्ञानावरण और उसके भेद
- ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानावरणके भेद व विशेष विचार
- ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानका विषय
- क्षण, लव आदि शब्दोंका अर्थ
- जघन्य अवधिज्ञानका क्षेत्र
- अवधिज्ञानके क्षेत्र और कालका एकसाथ विचार
- प्रसंगसे क्षेत्र आदि चारकी वृद्धिका नियम
- भवनत्रिकमें अवधिज्ञानके क्षेत्रमें कालका
- कालकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय
- क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषयका विवरण
- मानुषोत्तर शैलसे ४५ लाख योजनका ग्रहण किया है इस बातका समर्थन
- केवलज्ञानावरणीयका निर्देश
- केवलज्ञानका स्वरूपनिर्देश
- केवलज्ञानीका विषय
- दर्शनावरणीयकी नौ प्रकृतियाँ व उनका स्वरूप
- वेदनीय कर्मकी दो प्रकृतियाँ
- मोहनीय कर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियाँ
- दर्शन मोहनीय कर्मका विचार
- चारित्रमोहनीय कर्मके दो भेद
- कषायवेदनीय कर्मके १६ भेद
- नोकषायवेदनीयके नौ भेद
- आयुकर्म और उसके चार भेद

| | |
|---|---|
| • प्रकारान्तरसे विषयका निर्देश<br>• कालकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय<br>• क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय<br>• विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके छह भेद<br>• विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानका विषय<br>• प्रकारान्तरसे विषयनिर्देश<br>• देवगत्यानुपूर्वीकी उत्तरप्रकृतियाँ<br>• देवगत्यानुपूर्वीकी उत्तरप्रकृतियाँ<br>• आनुपूर्वियोंका अल्पबहुत्व<br>• पुनः वही अल्पबहुत्व<br>• नामकर्मकी शेष प्रकृतियाँ<br>• गोत्रकर्म और उसके दो भेद<br>• शंका-समाधानद्वारा गोत्रकर्मके अस्तित्वकी सिद्धि | • नामकर्म और उसकी ४२ पिण्डप्रकृतियाँ तथा उनका स्वरूपनिर्देश<br>• गति आदि नामकर्मके उत्तरभेद<br>• नरकगत्यानुपूर्वीकी उत्तरप्रकृतियाँ<br>• तिर्यंचगत्यानुपूर्वीकी उत्तरप्रकृतियाँ<br>• मनुष्यगत्यानुपूर्वीकी उत्तरप्रकृतियाँ<br>• उच्चगोत्र और नीचगोत्रका लक्षण<br>• अन्तरायकर्मकी पाँच प्रकृतियाँ<br>• भावप्रकृतिके दो भेद<br>• आगमभावप्रकृति<br>• नोआगमभावप्रकृति<br>• प्रकृतमें कर्मप्रकृति विवक्षित है इस बातका निर्देश<br>• शेष भंग वेदनाके समान हैं इस बातकी सूचना |